श्री १००८ आदिनाथ भगवान की आरती

ॐ जय आदीश प्रभो, स्वामी जय आदीश प्रभो ।
ऋषभ जिनन्दा प्यारे, तिहुं जग ईश विभो ॥ टेर ॥

नाभिराय के लाला, मरुदेवी नन्दन, स्वामी०...
नगर अयोध्या जनमें, जन गण मन रंजन । ॐ जय० ॥ १ ॥

प्रजापति कहलाये जगहित कर भारी, स्वामी०.....
जीवन वृत्ति सिखाई, नींव धरम डारी । ॐ जय० ॥ २ ॥

सकल विभव को त्यागा हुए आतम ध्यानी, स्वामी०.....
लोकालोक पिछाने भए केवलज्ञानी । ॐ जय० ॥ ३ ॥

गिरि कैलाश पे जाके, कीना तप भारी, स्वामी०.....
करम शिखर को चूरा, पग्नी शिवनारी । ॐ जय० ॥ ४ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, विधाता आदि तीर्थंकर, स्वामी०.....
सहस आठ नामों से, सुमरैं सुर इन्दर । ॐ जय० ॥ ५ ॥

ऋषि मुनिगण नरनारी, तुमको सब ध्यावें, स्वामी०.....
मुक्तचक्री पद लेके, शिव पद को पावें ।ॐ जय० ॥ ६ ॥

चरण आरती करके, शत २ शिरनाऊं । स्वामी०.....
ऐसी युक्ति पाऊं, 'प्रभु' सम बन जाऊं । ॐ जय० ॥ ७ ॥